The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 8 | August 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर एंव किशोरियों में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ0 उमेश सिंह, (असि0 प्रोफेसर)

एम0एड0 विभाग, डी0वी0कॉलेज,उरई जालौन, ईमेलः umeshsinghyadav16@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.17120359

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 19-08-2025

Published: 10-09-2025

Keywords:

माध्यमिक स्तर, किशोर एंव किशोरियां, व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण

ABSTRACT

वर्तमान समय में व्यवसाय, शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य है। अतः व्यवसाय से सम्बन्धित तथ्यों की जानकारी होना व उससे सम्बन्धित समस्याओं के प्रति जागरूक होना अत्यन्त आवश्यक है। शोध–कार्य के माध्यम से इनके बारे में सटीक जानकारी प्राप्त की जा सकती है। कुछ विद्यार्थी व्यवसाय चयन को लेकर असमंजस की स्थिति में रहते हैं जिसके कारण वे सही व्यवसाय का चुनाव नहीं कर पाते हैं। इस शोध के द्वारा माध्यमिक स्तर पर स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी छात्र–छात्राओं में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण का अध्ययन करके उन्हें व्यवसाय सम्बन्धी निर्देशन व परामर्श उपलब्ध कराया जा सकता है जिससे वे उचित व्यवसाय की ओर अग्रसर हो सकें। इसके साथ ही शिक्षकों को छात्र एवं छात्राओं की स्थिति के प्रति जागरूक किया जा सकता है जिससे शिक्षक छात्र एवं छात्राओं के व्यवसायिक द्वन्द की स्थिति के अनुसार ही निर्देशन व परामर्श योजना का निर्माण कर सकते है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से हम यह ज्ञात कर सकते हैं कि छात्रों में व्यावसायिक द्वन्द की स्थिति क्यों व किन कारणों से उत्पन्न होती है, उन कारणों को दूर करने के लिए व उनका सामना करने के लिए उन्हें पहले से ही तैयार किया जा सकता है। प्रस्तुत अध्ययन का उद्देष्य ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर एंव किशोरियों में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन करना है।

शोधार्थी ने sample में **88 किशोर एंव किशोरियां** को लिया है। अध्ययन हेतु **जालौन जिले** के उरई शहर तथा उसके आस–पास के ग्रामीण माध्यमिक स्तर के विद्यालयों का चयन किया गया है। शोधार्थी द्वारा अपने **उद्देष्य** की पूर्ति हेतु **सर्वेक्षण विधि** का प्रयोग किया है। प्रस्तुत शोध में नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा द्वारा प्रकाशित एवं **डॉ0 अनीत कुमार**, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवारा पंजाब और **श्रीमती रेखा**, रिसर्च स्कॉलर, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब द्वारा निर्मित 'कैरियर कॉनफ्लिक्ट स्केल' का उपकरण के रूप में प्रयोग किया गया। आंकड़ों के संयोजन के आधार पर वर्तमान में छात्र एवं छात्राएं दोनों में व्यवसाय को लेकर निर्णय – निर्धारण में अन्तर नहीं है। दोनों ही व्यवसाय हेतु सही हैं। बेरोजगारी की समस्याओं को देखते हुये छात्र एवं छात्राओं दोनों को ही जीविका हेतु परिवार व माता–पिता का सानिध्य प्राप्त हो रहा है एंव सरकार व अनेक स्वंय सेवी संगठनों द्वारा सभी को हर सम्भव रोजगार, व्यवसाय से सम्बन्धित शिक्षण में प्रवेश कें सम्बन्ध में समानता दी जा रही है। **किशोर एंव किशोरियां** को समानता का सुलभ अवसर व दिशानिर्देशन भी दिया जा रहा है।

प्रस्तावना–

शिक्षा मानव विकास का मूल साधन है, इसके द्वारा मनुष्य की मूल प्रवृत्तियों तथा जन्मजात शक्तियों का विकास उसके ज्ञान और कला कौशल में वृद्धि तथा व्यवहार में परिवर्तन किया जाता है और उसे सभ्य, सुसंस्कृत एवं योग्य नागरिक बनाया जाता है और यह कार्य मनुष्य के जन्म से ही प्रारम्भ हो जाता है। बच्चे के जन्म के कुछ दिन बाद ही उसके माता–पिता एवं परिवार के अन्य सदस्य उसे सुनना और बोलना सिखाने लगते हैं। जब बच्चा कुछ बड़ा हो जाता है तब उसे सामाजिक आचरण की विधियाँ सिखायी जाती हैं जब वह तीन–चार वर्ष का हो जाता है तो उसे पढ़ना–लिखना सिखाने लगते हैं। इसी आयु पर उसे विद्यालय भेजना प्रारम्भ किया जाता है। विद्यालय में उसकी शिक्षा सुनियोजित ढ़ंग से चलती है। विद्यालय के साथ–साथ उसे परिवार एवं समुदाय में भी कुछ न कुछ सिखाया जाता है और सीखने–सिखाने का यह क्रम विद्यालय छोड़ने के बाद भी जीवन भर चलता रहता है। इस सम्बन्ध में पेस्टालॉजी का कथन है ''शिक्षा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का स्वाभाविक, समरूप तथा प्रगतिशील विकास है।''

शिक्षा विकास की एक आजीवन चलने वाली प्रक्रिया है अर्थात् व्यक्ति अपने जन्म से मृत्यु तक जो कुछ सीखता है और अनुभव करता है, वह सब शिक्षा के अन्तर्गत आता है। उसके सीखने और अनुभव करने का परिणाम यह होता है कि वह धीरे–धीरे विभिन्न प्रकार से अपने भौतिक और आध्यात्मिक वातावरण से अपना सामंजस्य स्थापित करता है। शिक्षा मानव जीवन की प्रगति से जोड़ने की मुख्य धारा है। शिक्षा और विकास के सम्बन्ध में डॉ0 ए0स0 अल्तेकर का मत है कि ''शिक्षा को प्रकाश व शक्ति का ऐसा स्रोत माना जाता था, जो हमारी शारीरिक, मानसिक, भौतिक और आध्यात्मिक शक्तियों तथा क्षमताओं का निरन्तर एवं सामंजस्यपूर्ण विकास करके हमारे स्वभाव को परिवर्तित करती है और उसे उत्कृष्ट बनाती है।''

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व :

यह शोध छात्र–छात्राओं को इन पूर्वाग्रहों से निकालकर सही दिशा–निर्देशन में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर सकता है। छात्र–छात्राओं का अपनी रूचि व योग्यताओं से अनभिज्ञ होना ही उन्हें व्यावसायिक द्वन्द के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। प्रस्तुत शोध के माध्यम से छात्र–छात्राओं में दुविधाओं को दूर करने का प्रयास करके उन्हें उनकी रूचि, क्षमता, योग्यता के अनुसार व्यवसाय का चुनाव करने हेतु सुझाव प्रदान किया जा सकता है। नेगी, सुष्मिता व इशिता (2012), तूर, गुनित (2014), दानी, प्रियंका व हेत्वी देसाई (2018) नाखट, प्रीति (2019) उपरोक्त किये गये शोध कार्यों में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण जैसी समस्या पर कार्य नहीं किया गया है। शोधार्थी ने इसी को ध्यान में रखते हुये माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् किशोर एवं किशोरियों में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन नामक शोध शीर्षक पर कार्य करना प्रारम्भ किया।

शीर्षक कथन – ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत किशोर एंव किशोरियों में व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन ''।

अध्ययन के मुख्य उद्देष्य –

1 माध्यमिक स्तर के किशोर एवं किशोरियों में व्यवसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरों में व्यवसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरियों में व्यवसायिक निर्णय–निर्धारण का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएं –

1 माध्यमिक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में सार्थक अन्तर नहीं है।

2 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

3 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरियों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

अध्ययन की परिसीमाएं –

1 प्रस्तुत लघु शोध प्रबन्ध जनपद जालौन के अन्तर्गत यू0पी0 बोर्ड से सम्बद्ध स्नातक स्तर के विद्यार्थियों तक सीमित है।

2 शोधार्थी द्वारा व्यावसायिक द्वन्द का अध्ययन महिला–पुरूष; ग्रामीण–शहरी व स्ववित्तपोषित एवं वित्तपोषित महाविद्यालयों तक सीमित है।

3 प्रस्तुत शोध स्नातक स्तर के किशोर एवं किशोरियों को सम्मिलित किया गया है।

4 शोध के अन्तर्गत कुल 88 किशोर एवं किशोरियों को सम्मिलित किया गया है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन –

dqekj ik.Mk] Hkjr ¼2021½ ने ''सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों में व्यावसायिक अभिवृत्ति का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष में पाया कि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों की व्यावसायिक अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है। अतः यह कह सकते हैं कि सरकारी और गैर सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी में एक समान स्तर की व्यावसायिक अभिवृत्ति रहती है। उनकी व्यावसायिक अभिवृत्ति पर उनके विद्यालय को कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

dqekj >k] fnyhi ¼2019½ ने ''उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के बौद्धिक स्तर के सम्बन्ध में उनकी व्यवसायिक रूचियों का अध्ययन'' किया और निष्कर्ष में पाया कि व्यवसाय चयन छात्रों के ज्ञानार्जन, समझ, कलात्मक रूझान आदि विषयों से घनिष्ठतापूर्वक जुड़े हुये है। जिन विद्यालयों में इस कार्यक्रम का अभाव है। वहाँ प्रायः ऐसे विषयों का छात्र चयन कर लेते हैं जिसका उसके व्यावसायिक जीवन में कोई सम्बन्ध नहीं हाते । है और जब उन लोगों के सामने व्यावसाय चयन की समस्या आती है

तो वे पाते हैं कि उनके द्वारा पठित विषयों का सम्बन्ध उनके विषय से नहीं है, तब वे बहुत ही अफसोस करते हैं उन्हें यह सोचकर पश्चाताप होता है कि उनके व्यवसाय में उनके द्वारा पठित विषयों का कोई योगदान नहीं है।

cjkuh Mju] ,l0 ¼2018½ us ''विवाहित कार्यरत महिलाओं के मध्य व्यावसायिक तनाव, पारिवारिक तनाव एवं मानसिक स्वास्थ्य का प्रभाव'' पर अध्ययन किया और निष्कर्ष में पाया कि पारिवारिक द्वन्द्व के साथ कार्य तनाव तथा पारिवारिक तनाव के साथ कार्य द्वन्द्व में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध विधि – प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

प्रतिदर्ष –

शोधार्थी द्वारा Sample size के चयन हेतु Random sampling method का चयन कर 88 विद्यार्थियों को Sample के रूप में चुना गया है।

उपकरण –प्रस्तुत शोध में नेशनल साइकोलॉजिकल कॉरपोरेशन, आगरा द्वारा प्रकाशित एवं **डॉ0 अनीत कुमार**, असिस्टेन्ट प्रोफेसर, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवारा पंजाब और **श्रीमती रेखा**,, पंजाबी यूनिवर्सिटी पटियाला, पंजाब द्वारा निर्मित 'कैरियर कॉनफ्लिक्ट स्केल' *उपकरण का प्रयोग शोधकर्ता नें किया है।*

सांख्यिकीय विधि –

अमुख कार्य में **जांचकर्ता** ने sample के माध्यम से प्राप्त आंकड़ों का मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, तथा क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग करते हुए परिकल्पनाओं की व्याख्या की है।

आंकड़ों का विष्लेषण –

परिकल्पना क्रमांक– 01 माध्यमिक स्तर के किशोर एवं किशोरियों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या - 1

विवरण	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि $D=M_1-M_2$	C R क्रान्तिक अनुपात	सार्थकता स्तर
किशोर	44	217.36	21.67	4.97	1.5	0.05

किशोरियां	44	224.84	24.94			स्तर पर स्वीकृत

तालिका **संख्या** 01 के अवलोकनार्थ माध्यमिक शालाओं के छात्रों का मध्यमान 217.36 एवं मानक विचलन 21.67 निकला एंव छात्राओं का मध्यमान 224.84 तथा मानक विचलन 24.94 आया, दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 4.97 तथा टी–मान 1.5 प्राप्त हुआ जो 86 स्वतन्त्रांश के .05 स्तर पर सारणीमान 1.99 से कम है। माध्यमिक शालाओं में पठित किशोर एंव किशोरियों के व्यावसायिक **निर्णय–निर्धारण** में कोई सार्थक भिन्नता नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक–02 माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

तालिका संख्या - 2

विवरण	**संख्या (N)**	**मध्यमान (M)**	**मानक विचलन (SD)**	**मध्यमानों के अन्तर की मानक त्रुटि $D=M_1-M_2$**	**C R क्रान्तिक अनुपात**	**सार्थकता स्तर**
ग्रामीण किशोर	22	224.2	19.97	6.77	1.35	0.05 स्तर पर स्वीकृत
शहरी किशोर	22	215.00	24.72			

तालिका **संख्या** 02 के अवलोकन में माध्यमिक शालाओं में अध्ययनरत् ग्रामीण स्तर के छात्रों का मध्यमान 224.2 एवं मानक विचलन 19.97 है तथा शहरी स्तर के छात्रों का मध्यमान 215 एवं मानक विचलन 24.72 प्राप्त हुआ है। दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.77 है तथा टी–मान 1.35 प्राप्त हुआ है जो 42 स्वतंत्राश के .05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से कम है। माध्यमिक *शालाओं* में अध्यनरत् ग्रामीण एवं शहरी छात्रों के व्यावसायिक **निर्णय–निर्धारण** में कोई सार्थक अन्तर नहीं है, अतः शून्य परिकल्पना स्वीकृत होती है।

परिकल्पना क्रमांक– 03 **माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् ग्रामीण व शहरी किशोरियों के व्यावसायिक निर्णय–निर्धारण में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।**

तालिका संख्या 03

विवरण	**संख्या (N)**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**मानक त्रुटि $D=M_1-M_2$**	**C R क्रान्तिक अनुपात**	**सार्थकता स्तर**
ग्रामीण किशोरियां	22	217.90	18.59	6.63	2.09	0.05

शहरी किशोरियां	22	231.77	28.32			स्तर पर अस्वीकतृ

तालिका क्रमांक 03 के अवलोकनार्थ स्पष्ट है कि माध्यमिक शालाओं में पठित् ग्रामीण **किशोरियों** का मध्यमान 217.90 एवं मानक विचलन 18.59 निकला। इसी तरह शहरी छात्राओं का मध्यमान 231.77 एवं मानक विचलन 28.32 आया, दोनों समूहों की परिगणित मानक त्रुटि 6.63 है तथा टी–मान 2.09 प्राप्त हुआ जो 42 स्वतन्त्रांश के 0.05 स्तर पर सारणीमान 2.02 से अधिक है। माध्यमिक शालाओं में अध्ययन कर रहे ग्रामीण एवं शहरी छात्राओं के रोजगार **निर्णय–निर्धारण** में सार्थक अन्तर है, अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होती है।

शैक्षिक निहितार्थ –

परिणामों के सापेक्ष Intermediate level esa पठित् किशोर एवं **किशोरियों** के व्यवसायिक **निर्णय–निर्धारण** में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि शहरी व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् **किशोरियों** में **किषोरों** की अपेक्षा व्यवसायिक **निर्णय–निर्धारण** कम है। इसका कारण यह है कि माध्यमिक शालाओं esa अध्ययनरत् किशोर एवं **किशोरियों** दोनों ही व्यवसाय के प्रति जागरूक है तथा वर्तमान में व्यवसाय के महत्व को समझ रहे हैं व व्यवसाय सम्बन्धी विभिन्न जानकारियां प्राप्त कर रहे हैं परन्तु किशोरों की अपेक्षा **किशोरियों** को आज भी व्यवसाय सम्बन्धी सुलभता ना मिल पाने के कारण उनमें द्वन्द की स्थिति अधिक है। प्राप्त परिणाम में पाया गया है कि ग्रामीण व शहरी तथा स्ववित्तपोषित व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् किशोरों के व्यवसायिक **निर्णय–निर्धारण** में कोई सार्थक अन्तर नहीं है जबकि माध्यमिक स्तर पर क्रमशः ग्रामीण एवं वित्तपोषित शालाओं में पठित **किशोरियों** में रोजगार **निर्णय–निर्धारण** माध्यमिक level पर क्रमशः शहरी व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् **किशोरियों** की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह है कि माध्यमिक शालाओं के ग्रामीण व शहरी किशोरों को व्यवसाय सम्बन्धी वो हर सम्भव सुविधा प्रदान की जा रही है जबकि ग्रामीण व वित्तपोषित विद्यालयों में अध्ययनरत् **किशोरियों** को व्यवसाय सम्बन्धी सुविधा व सुलभता व अवसरों तथा सूचनाओं का शहरी **किशोरियों** की अपेक्षा अभाव रहता है।

वर्तमान युग में व्यवसाय को लेकर विद्यार्थियों के **निर्णय–निर्धारण** में अन्तर नहीं है। दोनों पक्ष ही व्यवसाय को लेकर अग्रसर हैं। बढ़ती बेरोजगारी की समस्याओं को देखते हुये छात्र एवं छात्राओं को अपनें व्यवसाय हेतु माता–पिता व परिवार का आर्थिक सहयोग प्राप्त हो रहा है एंव विद्यालय, मीडिया ,सरकार तथा विभिन्न स्वयं संगठनों द्वारा समानान्तर रोजगार, व्यवसायिक शिक्षा में प्रवेश उपलब्ध कराया जा रहा है। युवा छात्रों को व्यवसाय के समान अवसर व मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

सोलंकी, एस0के0 (2012); अनुसंधान विधियाँ, इन्द्रपुरी कालौनी, आगरा, माधव प्रकाशन कपिल, एच0के0 (2012); अनुसंधान विधियाँ, आगरा, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस

त्रिपाठी, लाल वचन (2002); मनोवैज्ञानिक अनुसंधान पद्धतियाँ, आगरा, एच0पी0 भार्गव बुक हाउस पाण्डेय, के0पी0 (2008); शैक्षिक अनुसंधान, वाराणसी,

झीलमराम राजमैथी, मजुमदार (2010); ''भारत में पीढ़ीगत शैक्षिक एवं व्यावसायिक गतिशीलता : सामाजिक एवं धार्मिक आयाम'' पी–एच0डी0 2010 अर्थशास्त्र विभाग, वर्तमान विश्वविद्यालय, कोटा

ए0एन0 जी0, एल्युटु (2011); शिक्षा विभाग, वेसन विश्वविद्यालय, नाईजीरिया, यूरोपियन जनरल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज 3(1) नई शिक्षा नीति 2020; मानव संसाधन मंत्रालय, भारत सरकार

Goswami, Sarita (2021); International Journal of Applied Research 2021, Volume 7(2) : 13-17 Page.

Shinde, Tukaram Narayan (2016); International Multidisciplinary Research Journal, Volume 6, Issue 4 Octo 2016.

Gahlot, Shilpa (2019); "A Critical Study of Teachers Sense of Responsibility and Mental Conflict in Context to Indian Society with reference to Socio Economic status" (Research in Maharaja Ganga Singh University Vikaner) Available online at https://ndlhandle.net/10603/309502.

Sarla (2019); Jhujhunu Kshetra ke B.Ed. Vidharthiyo ki Abhiprayna or Saibar Sansadhano ke pryog ke prati abivarti ka adhyayan (Research in Shri Jagdis Prasad Jhabarmal Tibarewala University Rajashthan) Available at http:/ndl.handle.net/10603/245883.

Kumar Jha, Dilip (2019); Remarking An Analisation Research Journals (Vol. 3 Issue 12 March 2019)

Kumar, Panda, Bharat (2021); International Journal of Creative Research Thought (IJCRT) Volume 9, Issue 9 September 2021.

Valphang, Meyhar and Other (2008); Ph.d. Education 2008 Journal of Mangerial Psychology, Volume 23 Issue 3, pp 292-323.

Websites :

- http://www.shodgangotri.co.in
- http:// hi.m.wikipedia.org
- http://pdfs.sematicscholar.org
- http://www.scotbuzz.org
- http://hdl.handle.net
- http://www.researchgate.net
- https://www.guides.library.bloomu.edu
- http://en.m.wikipedia.org
- http://dictionary.cambridge.org
- www.google.co.in
- www.ugc.ac.in
- https://scholar.google.icom.
- http://egyankosh.ac.in
- vc.bridgew.edu
- www./journalijar.com